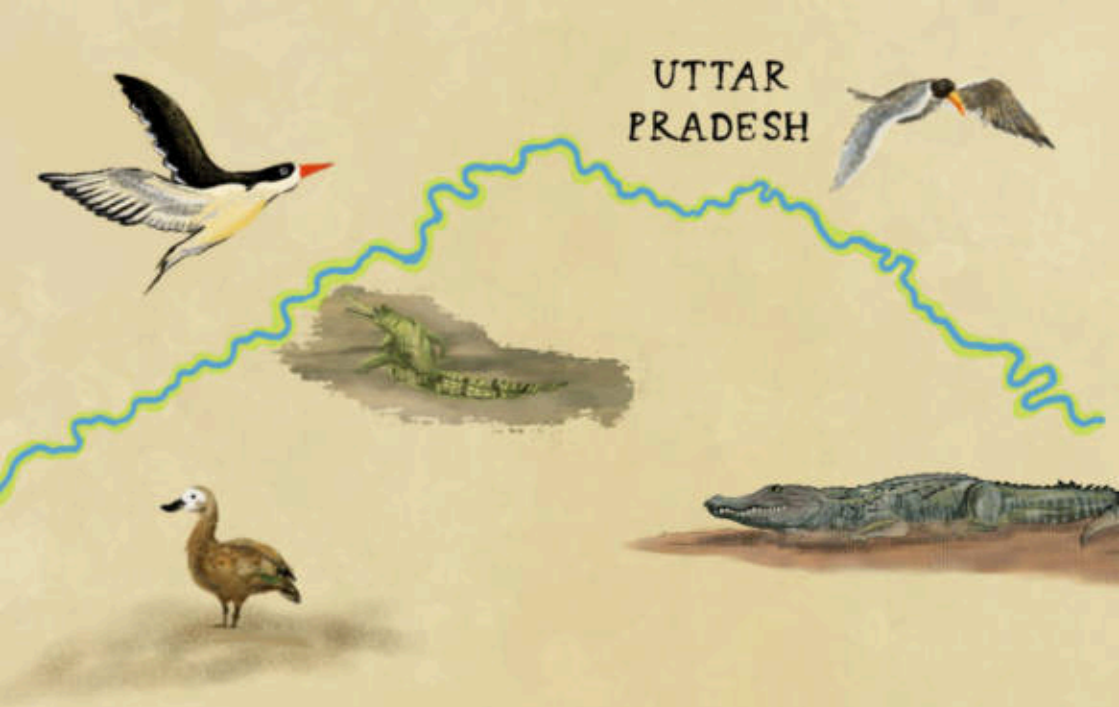


चंबल के सारथी

नाविक प्रशिक्षण पुस्तिका



GHARIAL ECOLOGY PROJECT

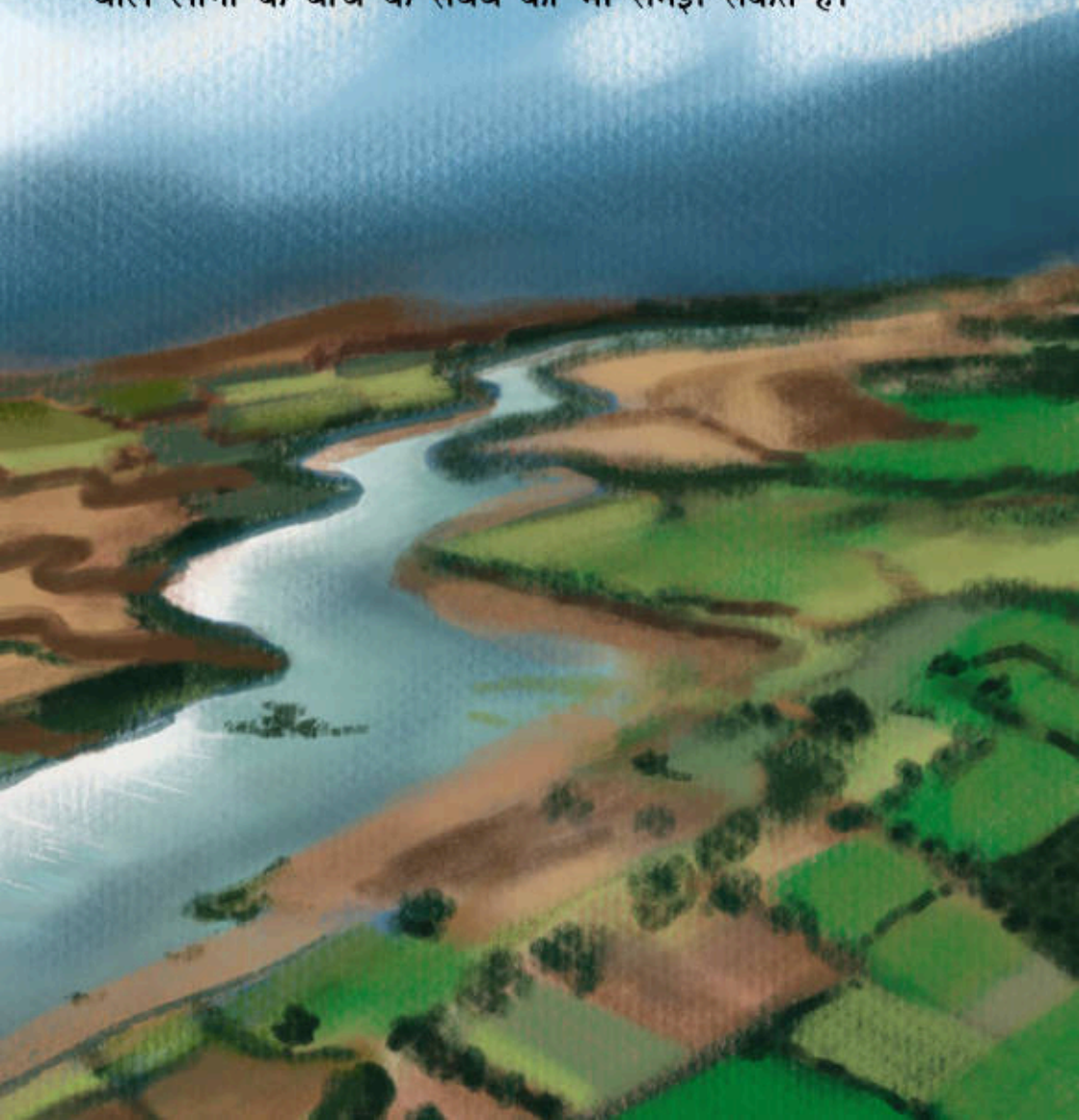
चम्बल में आपका स्वागत है

चम्बल भारत की सबसे खास नदियों में से एक है। यह नदी अपने साफ पानी, रेतीले टापुओं, गहरी बीहड़ घाटियों, तरह-तरह के वन्यजीवों और यहां की पुरानी लोक परंपराओं के लिए जानी जाती है। चम्बल नदी लगभग 960 किलोमीटर तक बहती है और मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से होकर गुजरती है। आगे जाकर यह यमुना नदी में मिल जाती है।

चम्बल नदी के किनारे बहुत कम बड़े शहर और बड़े कारखाने होने के कारण इसका प्राकृतिक रूप आज भी काफी हद तक बना हुआ है। नदी का साफ पानी, रेतीले किनारे, बीहड़ और नदी के आसपास के प्राकृतिक इलाके कई तरह के वन्यजीवों के लिए सुरक्षित घर हैं।



चम्बल आने वाले लोगों के लिए यह सिर्फ नाव की सवारी नहीं है। यह एक ऐसी प्राकृतिक नदी और उसके आसपास के जीवन को करीब से देखने और समझने का मौका है, जो आज बहुत कम जगहों पर देखने को मिलता है। यहां आने वाले लोग नदी, यहां के वन्यजीवों और पीढ़ियों से नदी के किनारे रहने वाले लोगों के बीच के संबंध को भी समझ सकते हैं।



चम्बल का पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में चम्बल का एक खास स्थान है। धार्मिक ग्रंथों में चम्बल नदी का संबध **चर्मण्वती** नाम से बताया गया है और इसका संबंध **महाभारत** की कहानियों से भी है।

एक पुरानी मान्यता के अनुसार, चम्बल नदी का संबंध राजा रंतिदेव और उनके राज्य में होने वाले यज्ञ और बलि की परंपराओं से है। एक और प्रसिद्ध स्थानीय मान्यता चम्बल के बीहड़ और आस पास के इलाके को **द्रौपदी की कहानी और उनके श्राप** से जोड़ती है।





इन कहानियों को चाहे पौराणिक कथाएं माना जाए, लोककथाएं या लोगों की पुरानी सांस्कृतिक यादें, ये सभी यह दिखाती हैं कि चम्बल मध्य और उत्तर भारत के लोगों की कल्पना, परंपराओं और संस्कृति से कितनी गहराई से जुड़ी हुई है।

नाविकों के लिए ये कहानियां पर्यटकों को चम्बल के बारे में सिर्फ एक वन्यजीव देखने की जगह के रूप में नही, बल्कि एक ऐसी नदी के रूप में बताने का अवसर देती हैं, जिसकी संस्कृति और इतिहास बहुत पुराना है।

चम्बल के बीहड़, लोग और कहानियां

चम्बल नदी के किनारे के खास तरह के बीहड़ इस नदी के सबसे पहचान वाले इलाकों में से एक हैं। ये गहरी नालियां, ऊची-नीची चट्टानें और घास से ढकी ढलानें हजारों सालों में मिट्टी और पानी के प्राकृतिक कटाव से बनी हैं। ये बीहड़ नदी और आसपास के गांवों और जमीन के बीच एक खास तरह का इलाका बनाते हैं। इन बीहड़ो से जुड़ी कई कहानियां भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं। यहा घूमने वाले अलग-अलग समुदायों और बीहड़ में रहने वाले प्रसिद्ध लोगों से जुड़ी कई कहानियां सुनाई जाती रही हैं।



आज इसी इलाके को एक और वजह से ज्यादा महत्व दिया जा रहा है- यहां की बहुत खास प्राकृतिक संपदा/खास प्रकृति के लिए। बीहड़ कई पक्षियों के घोंसले बनाने और प्रजनन के लिए जगह देते हैं। यहां वन्यजीवों को रहने और छिपने की जगह मिलती है। पक्षियों, सरीसृपों और दूसरे प्रजातियों के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक घर है। बीहड़ हमें यह याद दिलाते हैं कि जिन इलाकों को हम अक्सर 'बेकार जमीन' समझते हैं, वे वास्तव में प्रकृति और कई तरह के जीव-जंतुओं के लिए बहुत जरूरी जगह हैं।





वन्यजीवों की रक्षा करने वाली नदी

चम्बल नदी को दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण मीठे पानी की नदी के रूप में जाना जाता है।

नदी और यहां के खास वन्यजीवों की रक्षा के लिए **राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य** बनाया गया है। यह अभयारण्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश-तीनों राज्यों में फैला हुआ है।

राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के वन विभाग नदी के इस हिस्से की रक्षा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चम्बल नदी खास तौर पर क्रिटिकली एंडजर्ड घड़ियाल, रेड क्राउन्ड रूफ टर्टल, गंगा नदी की डॉल्फिन, इंडियन स्किमर, ब्लैक-बेलीड टर्न, सारस, मगरमच्छ, स्मूथ-कोटेड ऑटर और कई दूसरी प्रजातियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

चम्बल सर्दियों में आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण जगह है। ठंड के महीनों में यहां बतख, हंस, पानी के किनारे रहने वाले पक्षी, गल, टर्न और शिकारी पक्षी देखे जा सकते हैं। ये पक्षी बहुत दूर-दूर से सर्दियां बिताने के लिए नदी के किनारे आते हैं।

चम्बल नदी के बड़े क्षेत्र में/बड़े स्तर पर किए गए सर्वेक्षणों में भी सैकड़ों पक्षी प्रजातियां और दर्जनों स्तनधारी और सरीसृप प्रजातियां दर्ज की गई हैं।

घड़ियाल-चम्बल की पहचान

घड़ियाल चम्बल में पाए जाने वाले सबसे खास जानवरों में से एक है। अंग्रजी में घड़ियाल को 'घड़ियाल' ही कहा जाता है, 'एलिगेटर' नहीं। एलिगेटर एक बिल्कुल अलग प्रजाति है जो अमेरिका में पाई जाती है।

घड़ियाल का लंबा और पतला मुंह मछली पकड़ने के लिए खास तौर पर बना होता है। बड़े नर घड़ियाल के मुंह के आगे के हिस्से पर एक खास गोल उभरा हुआ हिस्सा बनता है, जिसे ''घड़ा'' कहते हैं। यह घड़ियालों के एक-दूसरे को संकेत देने और आपस में बात करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चम्बल घड़ियाल के लिए दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण जगहों में से एक है। नदी के रेतीले टापू और किनारे घड़ियालों के अंडे देने के लिए जरूरी जगह देते हैं, जबकि नदी में बहुत सारी मछलियां उन्हें भोजन देती हैं।

घड़ियाल स्वस्थ नदी के लिए एक अच्छे संकेतक हैं। उन्हें खुली, बिना रूकावट बहने वाली और मौसम के अनुसार बाढ़ वाली नदियों की जरूरत होती है। घड़ियालों की रक्षा करने का मतलब है नदी के पानी के बहाव को बनाए रखना, रेतीली जगहों की रक्षा करना और मछलियों की संख्या को सुरक्षित रखना। इससे घड़ियालों, दूसरे वन्यजीवों और नदी के किनारे रहने वाले लोगों के लिए नदी स्वस्थ बनी रहती है।

जब नाविक पर्यटकों को घड़ियाल दिखाते हैं, तो वे उन्हें यह बता सकते हैं कि वे सिर्फ एक अनोखे जीव को नहीं दिखा रहे हैं। वे पर्यटकों को नदी के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक दूत से परिचित करा रहे हैं।



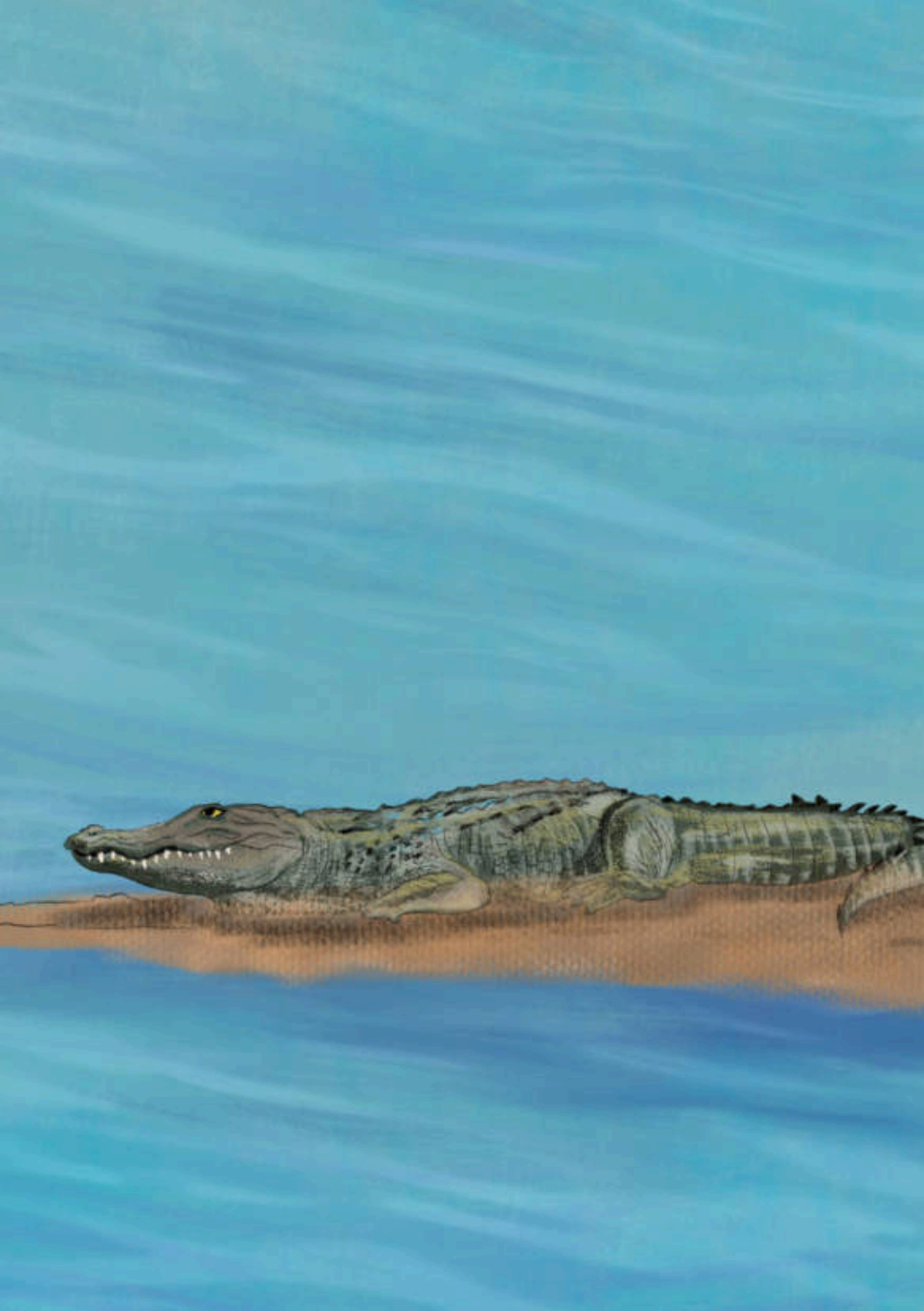
मगरमच्छ-चम्बल का दूसरा महत्वपूर्ण जीव

मगरमच्छ चम्बल के इलाके में पाया जाने वाला दूसरा मगरमच्छ वर्ग का जीव (Crocodilian) है।

घड़ियाल के विपरीत, मगरमच्छ का थूथन चौड़ा होता है और यह कई तरह का भोजन खाता है। यह अलग-अलग तरह के पानी वाले इलाकों में रह सकता है, जैसे नदियाँ, दलदली इलाके और छोटे जलस्रोत।

रेतीले टापू पर मगरमच्छ को धूप सेंकते हुए देखना, पर्यटकों को मगरमच्छ के व्यवहार, शरीर का तापमान बनाए रखने/शरीर का तापमान नियंत्रित करना और भारत में पाए जाने वाले अलग-अलग तरह के मगरमच्छ वर्ग के जीवों के बारे में समझाने का एक अच्छा मौका है।

घड़ियाल और मगरमच्छ दो अलग-अलग प्रजातियाँ हैं और दोनों के रहने और जीने के तरीके भी अलग हैं। दोनों को देखना पर्यटकों के लिए नदी में रहने वाले सरीसृपों की विविधता को समझने का एक अच्छा अवसर है।

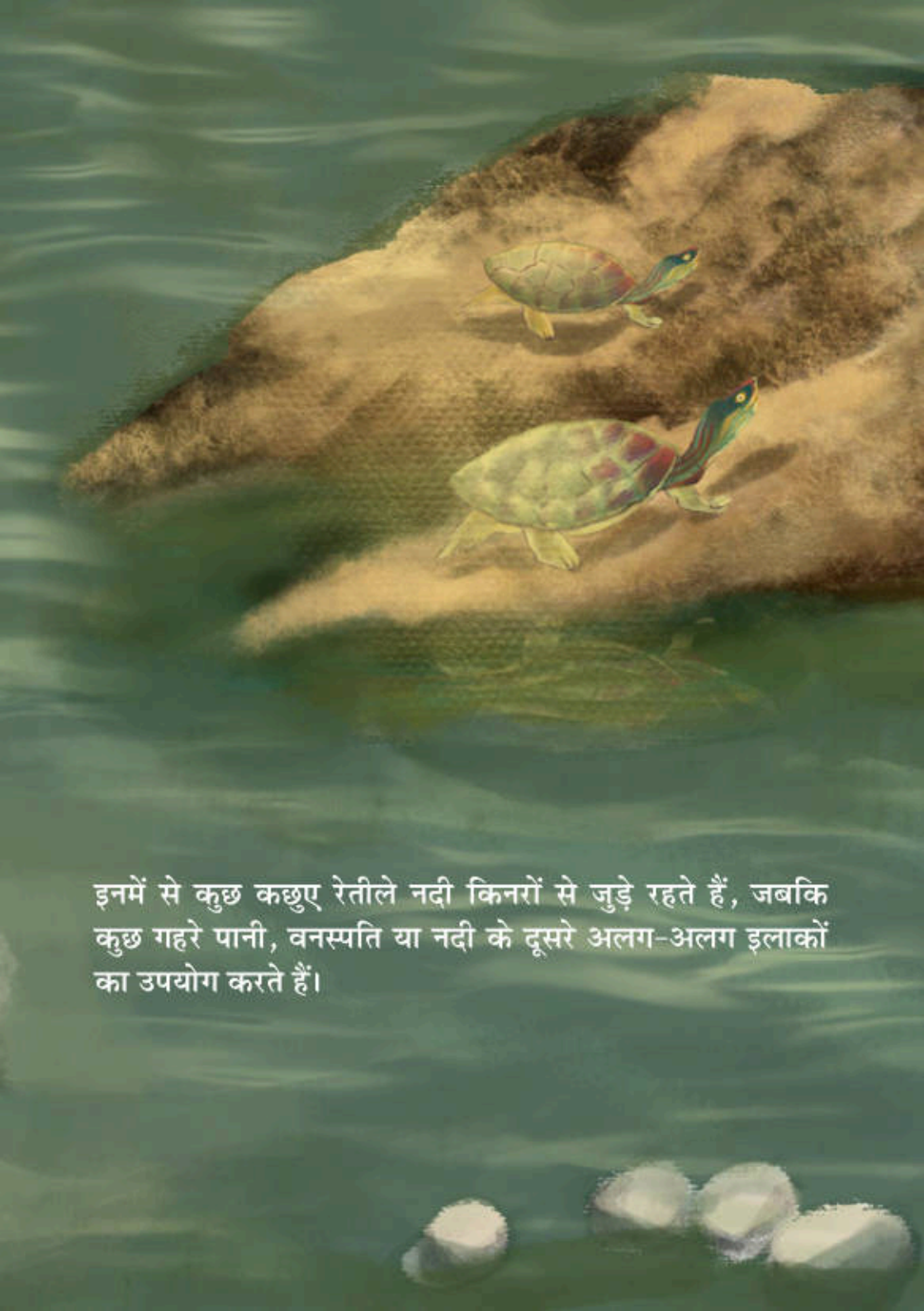


चम्बल के कछुए

चम्बल नदी मीठे पानी के कछुओं के लिए खास तौर पर बहुत महत्वपूर्ण है।

चम्बल नदी से जुड़ी कछुओं की प्रजातियों में रेड-क्राउन्ड रूफ्ड टर्टल, थ्री-स्ट्राइप्ड रूफ्ड टर्टल, क्राउन्ड रिवर टर्टल, इंडियन रूफ्ड टर्टल, इंडियन टेंट टर्टल, गंगे सॉफ्टशेल टर्टल, इंडियन नैरो-हेडेड सॉफ्टशेल टर्टल और इंडियन फ्लैपशेल टर्टल शामिल हैं।





इनमें से कुछ कछुए रेतीले नदी किनरों से जुड़े रहते हैं, जबकि कुछ गहरे पानी, वनस्पति या नदी के दूसरे अलग-अलग इलाकों का उपयोग करते हैं।

चम्बल के पक्षी

पक्षीयाँ चम्बल के पर्यटकों के लिए एक बहुत बड़ा आकर्षण का केन्द्र है। नदी के रेतीले टापू, उथला पानी, छोटे-बड़े द्वीप, बीहड़ और नदी के किनारे उगने वाली वनस्पति ऐसे स्थान बनाते हैं, जहाँ रहने वाले पक्षियों के साथ-साथ मौसम के अनुसार आने वाले पक्षी भी पाए जाते हैं।

इंडियन स्किमर चम्बल के सबसे खास और प्रसिद्ध पक्षियों में से एक है। इसकी चोंच बहुत खास होती है, जिसमें नीचे का जबड़ा ऊपर के जबड़े से थोड़ा आगे निकला होता है। यह पानी की सतह के बहुत करीब उड़ता है और भोजन ढूँढते समय, अपनी खास चोंच से पानी की सतह को छूते हुए आगे बढ़ता है। इसी वजह से इसका नाम स्किमर पड़ा है।

चम्बल में पाए जाने वाले दूसरे खास पक्षियों में सारस क्रेन, ब्लैक-नेक्ड स्टॉर्क, पल्लास फिश ईगल, रिवर टर्न, ब्लैक-बेलीड टर्न, ग्रेट थिक-नी, ओरिएंटल डार्टर, पेंटेड स्टॉर्क, बार-हेडेड गूज, रडी शेल्डक और सर्दियों में आने वाली बत्तखों और पानी के किनारे रहने वाले कई तरह के पक्षी शामिल हैं।

नेशनल चम्बल सैंक्चुअरी को एक महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र माना जाता है। उपलब्ध पक्षी सूची के अनुसार, इस सैंक्चुअरी में 160 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ दर्ज की गई है। चम्बल नदी के पूरे क्षेत्र में किए गए अध्ययनों में 300 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं।



घड़ियाल इकोलॉजी प्रोजेक्ट

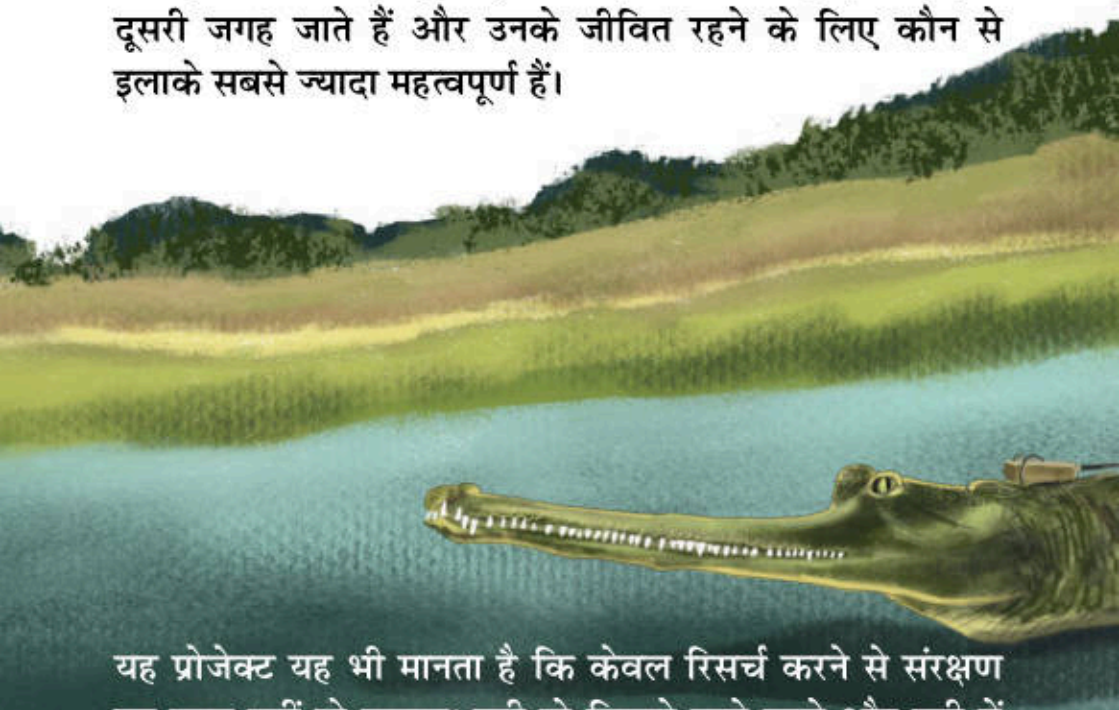
2008 से, घड़ियाल इकोलॉजी प्रोजेक्ट (GEP) चम्बल के क्षेत्र में काम कर रहा है। इसका उद्देश्य चम्बल नदी और इसके वन्यजीवों के बारे में लंबे समय तक वैज्ञानिक जानकारी जुटाना और इनके संरक्षण में मदद करना है।

इस प्रोजेक्ट की शुरूआत घड़ियालों के जीवन के रहस्यों को समझने के लिए की गई, क्योंकि उस समय घड़ियालों के रहने, उनके व्यहार और जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी थी। आज यह प्रोजेक्ट घड़ियालों, दूसरे वन्यजीवों और नदी के किनारे रहने वाले समुदायों के लिए चम्बल को सुरक्षित रखने के लिए कई तरह से काम करता है।



यह प्रोजेक्ट चम्बल नदी और घड़ियालों के बारे में बहुत बारीकी से जानकारी जुटाता है। इस जानकारी के आधार पर संरक्षण के लिए काम किए जाते हैं। इसके लिए स्थानीय समुदायों और वन विभागों के साथ मिलकर काम और सहयोग बढ़ाया जाता है।

GEP की लंबे समय से चल रही निगरानी से यह समझने में मदद मिली है कि घड़ियाल चम्बल नदी का किस तरह उपयोग करते हैं, वे कहाँ प्रजनन करते हैं, घड़ियाल नदी में किस तरह एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं और उनके जीवित रहने के लिए कौन से इलाके सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।



यह प्रोजेक्ट यह भी मानता है कि केवल रिसर्च करने से संरक्षण का काम नहीं हो सकता। नदी के किनारे रहने वाले और नदी में आने-जाने वाले लोग चम्बल के भविष्य का एक बहुत जरूरी हिस्सा हैं।

स्थानीय समुदाय-चम्बल के रखवाले

चम्बल एक जीवंत क्षेत्र है और स्थानीय समुदायों का नदी के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध है।

नाविक, मछुआरे, किसान, पशुचारक, और नदी पर निर्भर दूसे समुदायों के पास पीढ़ियों से नदी के बारे में जानकारी है-जैसे नदी की धाराएँ, रेतीले टापू, मौसम, वन्यजीव और पानी का बदलता स्तर।

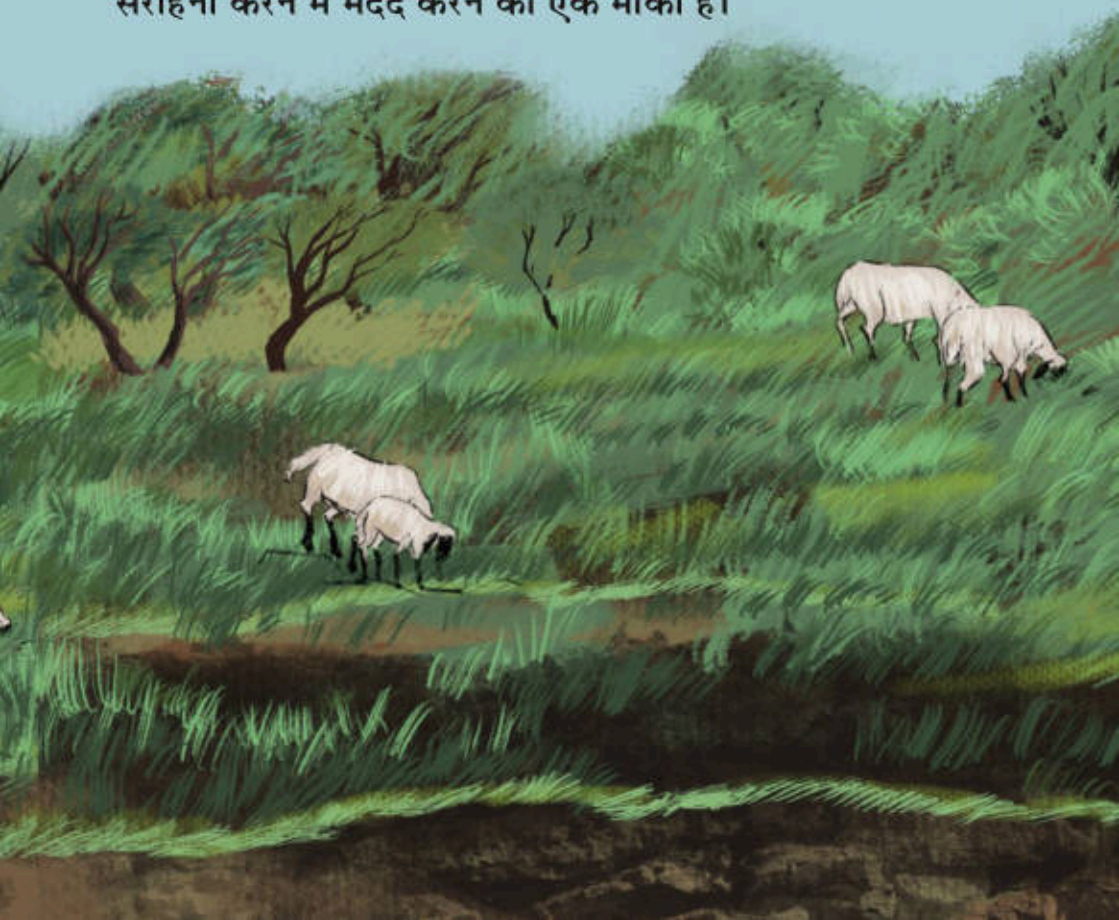
यह जानकारी बहुत मूल्यवान है।



जब वैज्ञानिक जानकारी और स्थानीय लोगों की जानकारी साथ आती है, तो संरक्षण का काम और मजबूत होता है। जो लोग नदी को करीब से जानते हैं, वे वन्यजीवों को देखने, उनकी जानकारी साझा करने, पर्यटकों को जिम्मेदारी से गाइड करने और महत्वपूर्ण इलाकों को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

इसलिए नाविक केवल नाव चलाने वाला व्यक्ति नहीं है। **एक नाविक चम्बल का कहानीकार, प्रकृतिविद, गाइड और प्रतिनिधि है।**

हर नाव की सवारी पर्यटकों को चम्बल को समझने और उसकी सराहना करने में मदद करने का एक मौका है।

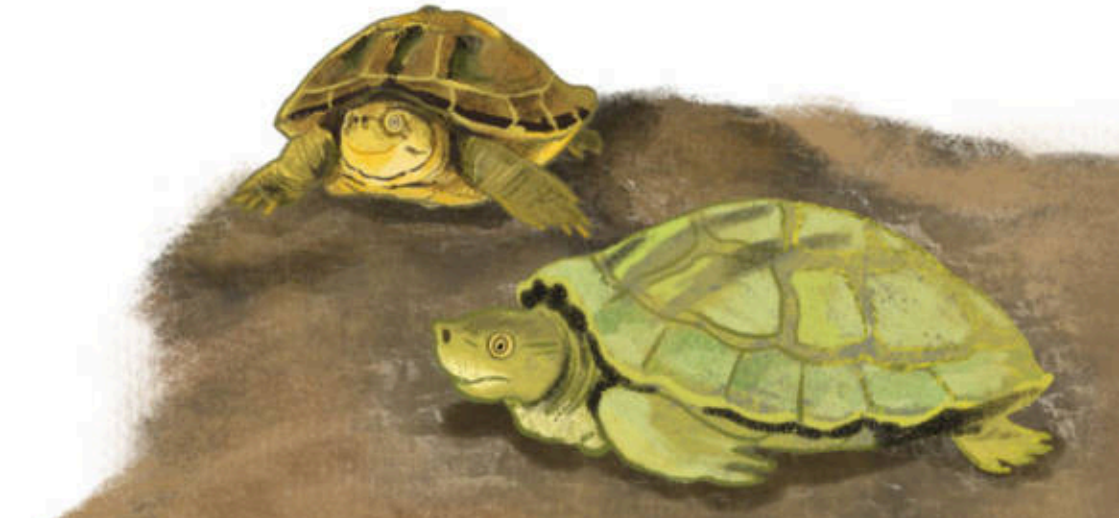


चम्बल–प्रकृति की एक जीवंत पाठशाला

नाव से की जाने वाली सफारी में कम समय में पर्यटकों को प्रकृति के कई अलग-अलग पहलुओं के बारे में जानने का मौका मिलता है। एक ही नाव की सवारी में पर्यटक देख सकते हैं।

- रेतीले टापू पर धूप सेंकता हुआ घड़ियाल
- पानी के किनारे आराम करता हुआ मगरमच्छ
- धूप सेंकते हुए कछुए
- नदी के ऊपर उड़ता हुआ इंडियन स्किमर
- मछली पकड़ते हुए रिवर टर्न
- दूर के प्रजनन क्षेत्रों से आने वाली बत्तखें
- ऊँची जगह पर बैठकर नदी पर नजर रखते हुए ईगल
- जमीन पर रहने वाले वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण बीहड़





सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि ये सभी चीजें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
स्वस्थ नदी से स्वस्थ रेतीले टापू बनते हैं।
स्वस्थ रेतीले टापू उन वन्यजीवो के लिए जरूरी हैं जो वहाँ अंडे देते हैं।
पानी का सही बहाव मछलियों के लिए जरूरी है।
मछलियाँ दूसरे शिकार करने वाले जीवों के लिए भोजन हैं।
ये सभी आपसी संबंध मिलकर चम्बल का पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं।

जिम्मेदार पर्यटन



नाविक पर्यटकों को इन बातों के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं:

- वन्यजीवों से दूरी बनाए रखें।
- घड़ियाल और मगरमच्छों के प्राकृतिक व्यवहार को ध्यान से देखें और समझें।
- जानवरों और उनके अंडे देने वाले इलाकों के पास धीमी अवाज में बात करें।
- वन्यजीवों के पास नाव को अचानक न मोड़ें और न ही अचानक उसकी दिशा बदलें।
- जंगली जानवरों को कभी खाना न खिलाएँ।
- नदी में कोई भी चीज न फेंके।
- प्लास्टिक और कचरे को नदी से दूर रखें।
- तय किए गए रास्तों और सैंक्चुअरी के नियमों का पालन करें।
- वन्यजीवों को स्वतंत्र रूप से आने-जाने दें।
- धूप सेंक रहे जानवरों को परेशान न करें।
- पक्षियों को बिना उनका पीछा किए, देखें।
- गाइड और वन विभाग के निर्देशों का पालन करें।



लक्ष्य बहुत आसान है:

वन्यजीवों को इस तरह देखें कि उनके प्राकृतिक व्यवहार में कोई बदलाव न आए।

एक सफल सफारी वह नहीं है जिसमें पर्यटक किसी जानवर के सबसे ज्यादा करीब पहुँच जाएँ।

एक सफल सफारी वह है जिसमें पर्यटक चम्बल के जानवरों, उनके प्राकृतिक व्यवहार और उनके रहने के स्थान को और बेहतर तरीके से समझें और उनकी ज्यादा सराहना करें।



हर नाविक के लिए एक संदेश

हम चम्बल की पहचान और कहानी को लोगों तक पहुँचाते हैं। चम्बल पर पर्यटकों को ले जाने वाला हर नाविक इस खास क्षेत्र की कहानी का एक हिस्सा बन जाता है। वन्यजीवों के पास किस तरह जाते हैं और चम्बल के इतिहास के बारे में किस तर बताते हैं- इन सभी बातों से यह तय होता है कि पर्यटक चम्बल को किस तरह समझते हैं और उसे किस तरह याद रखते हैं।

जब हम घड़ियाल के बारे में बताते हैं, तो हम एक ऐसे महत्वपूर्ण साथी के बारे में बताते हैं जो हमारे देश के पानी की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



जब हम किसी कछुए को दिखाते हैं, तो हम एक ऐसे जीव के बारे में बताते हैं, जो 25 करोड़ साल पहले धरती पर आया था।

जब हम चम्बल के बीहड़ों के बारे में बताते हैं, तो हम पानी और समय के कारण बने इस क्षेत्र की प्राकृतिक कहानी साझा करते हैं।

और जब हम स्थानीय समुदायों के बारे में बात करते हैं, तो हम उन लोगों की बात करते हैं जिनका जीवन और ज्ञान पीढ़ियों से इस नदी से जुड़ा हुआ है।

चम्बल का भविष्य उन लोगों पर निर्भर करता है जो इसे जानते हैं, इसकी कद्र करते हैं और इसकी देखभाल करते हैं।

चम्बल के महत्वपूर्ण सरीसृप

मगरमच्छ वर्ग के जीवन और कछुए:

घड़ियाल
मगरमच्छ
रेड-क्राउन्ड रूफ्ड टर्टल
थ्री-स्ट्राइप्ड रूफ टर्टल
क्राउन्ड रिवर टर्टल
इंडियन रूफ्ड टर्टल
इंडियन टेंट टर्टल
गंगे सॉफ्टशेल टर्टल
नैरो-हेडेड सॉफ्टशेल टर्टल
इंडियन फ्लैपशेल टर्टल
इंडियन स्टार टॉर्टिइज़
इंडियन पीकॉक सॉफ्टशेल टर्टल

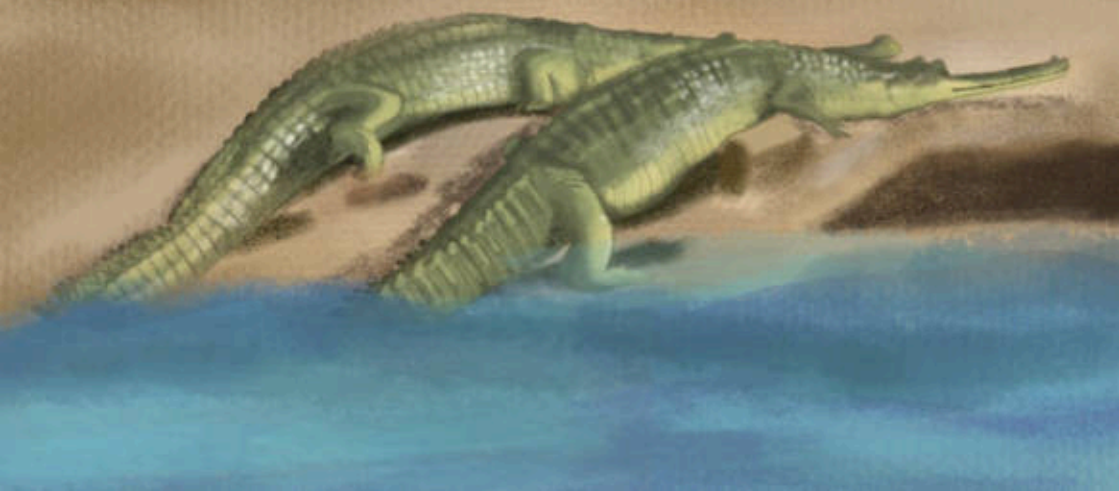
छिपकलियाँ और गेको:

बंगाल मॉनिटर
इंडियन गार्डन लिज़र्ड
येलो-बैलीड हाउस गेको
कॉमन हाउस गेको
स्पॉटेड सपल स्किंक
इंडियन फ्रिंज-टोड लिज़र्ड
फैन-थ्रोटेड लिज़र्ड
इंडियन कैमीलियन
इंडियन रॉक अगामा

* यह पूरी सूची नहीं है। हर प्रजाति को देखने की संभावना मौसम और जगह के अनुसार अलग-अलग होती है।

साँप:

इंडियन रैट स्नेक
स्पेक्टेकल्ड कोबरा
कॉमन क्रेट
रसेल्स वाइपर
सॉ-स्केल्ड वाइपर
चेकरड कीलबैक
कॉमन वुल्फ स्नेक
स्ट्रीक्ड कुकरी स्नेक
बैंडेड कुकरी स्नेक
इंडियन ट्रिकेट स्नेक
ओरिएंटल सैंड स्नेक
बैंडेड रेसर
रसल कुकरी साँप
रजत बन्सी
बार्ड वोल्फ स्नेक
रेड सैंड बोआ
कॉमन सैंड बोआ
कॉमन कैट स्नेक
कॉमन वाइन स्नेक
ग्रीन कीलबैक
बफ-स्ट्राइप्ड कीलबैक
कॉमन ब्रॉन्जबैक
इंडियन रॉक पाइथन
लीथ्स सैंड स्नेक
कॉमन कुकरी स्नेक



चम्बल के महत्वपूर्ण पक्षी

इंडियन स्किमर
ब्लैक-बेलीड टर्न
रिवर टर्न
लिटिल टर्न
व्हिस्कर्ड टर्न
ब्लैक-हेडेड गल
पल्लास गल
सारस क्रेन
ब्लैक-नेक्ड स्टॉर्क
एशियन वूली-नेक्ड स्टॉर्क
एशियन ओपनबिल
पेंटेड स्टॉर्क
ओरिएंटल डार्टर
लिटिल कॉर्मोरेंट
इंडियन कॉर्मोरेंट
ग्रेट कॉर्मोरेंट
ग्रेट एग्रेट
लिटिल एग्रेट
इंडियन पॉन्ड हेरॉन
पर्पल हेरॉन
ग्रे हेरॉन
कैटल एग्रेट
स्पॉट-बिल्ड पेलिकन
डालमेशियन पेलिकन
ऑस्प्रे
पल्लास फिश ईगल
इजिप्शियन वल्चर
शॉर्ट-टोड स्नेक ईगल
इंडियन स्पॉटेड ईगल
बोनेलीज ईगल
ब्लैक काइट
लॉन्ग-लेग्ड बज़र्ड
पेरेग्रीन फाल्कन
यूरेशियन केस्ट्रेल
स्पॉटेड आउलेट
इंडियन स्कॉप्स आउल
इंडियन रोलर
यूरोपियन रोलर
व्हाइट-थ्रोटेड किंगफिशर
पाइड किंगफिशर
एशियन ग्रीन बी-ईटर
इंडियन ग्रे हॉर्नबिल
एलेक्जेंड्रिन पैराकीट
रोज़-रिंग्ड पैराकीट
प्लम-हेडेड पैराकीट

* यह पूरी सूची नहीं है। हर प्रजाति को देखने की संभावना मौसम और जगह के अनुसार अलग-अलग होती है।

ब्लैक ड्रोंगो
रुफस ट्रीपाई
लार्ज-बिल्ड क्रो
इंडियन पीफाउल
ग्रे फ्रैंकोलिन
ब्लैक फ्रैंकोलिन
गेटर कूकाल
एशियन कोयल
व्हाइट-ब्रेस्टेड वाटरहेन
यूरेशियन मूरहेन
ग्रेट थिक-नी
इंडियन थिक-नी
रिवर लैपविंग
रेड-वॉटल्ड लैपविंग
लिटिल रिंग्ड प्लोवर
ब्लैक-विंग्ड स्टिल्ट
कॉमन सैंडपाइपर
ग्रीन सैंडपाइपर
कॉमन ग्रीनशैंक
कॉमन रेडशैंक
वुड सैंडपाइपर
ब्लैक-टेल्ड गॉडविट
बार-हेडेड गूज
रूडी शेल्डक
नॉर्दन पिंटेल
रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड
कॉमन पोचार्ड
लेसर व्हिस्लिंग-डक
शिवहंस
व्हाइट-ब्रोड वैगटेल



चम्बल के महत्वपूर्ण स्तनधारी

गंगा नदी डॉल्फिन
स्मूथ-कोटेड ऑटर
बाघ
स्याहगोश
भालू
लेपर्ड
बिज्जू
नीलगाय
चौसिंगा
ब्लैकबक
चिंकारा
सांभर
स्पॉटेड डियर
जंगली सूअर
इंडियन वुल्फ
गोल्डन जैकाल
इंडियन फॉक्स
स्ट्राइप्ड हाइना
जंगल कैट
लेपर्ड कैट
रीसस मकाक
हनुमान लंगूर
इंडियन हेयर
इंडियन पोरक्यूपाइन
फाइव-स्ट्राइप्ड पाम स्क्विरल
इंडियन फ्लाइंग फॉक्स



शॉर्ट-नोज्ड फ्रूट बैट
लेसर माउस-टेल्ड बैट
इंडियन पिपिस्ट्रेल
कॉमन पाम सिवेट
स्मॉल इंडियन सिवेट
ग्रे मोंगूस
स्मॉल इंडियन मोंगूस
रड्डी मोंगूस
इंडियन पैंगोलिन

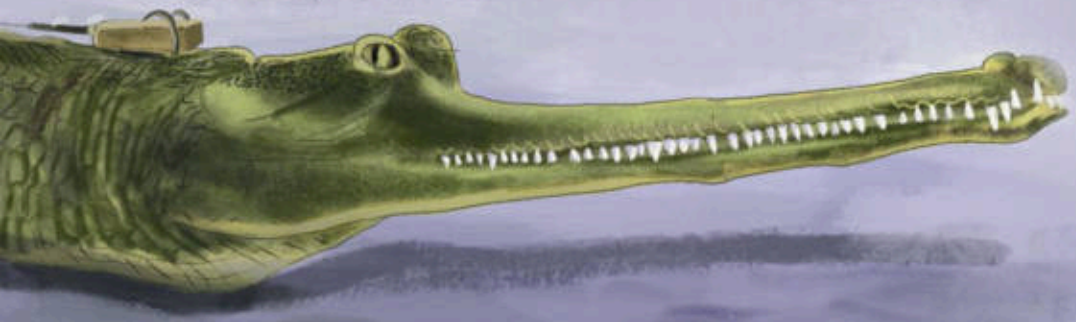
इंडियन लॉन्ग-ईयर्ड हेजहॉग
शॉट-टेल्ड बैंडिकूट रैट
सॉफ्ट-फर्ड फील्ड रैट
लिटिल इंडियन फील्ड माउस
इंडियन जर्बिल
इंडियन बुश रैट

ग्रेटर फॉल्स वैम्पायर बैट
फुलवस लीफ-नोज़्ड बैट
ग्रेटर माउस-टेल्ड बैट
डॉर्मर्स बैट
छछुंदर
लॉन्ग-विंग्ड टूम्ब बैट
ब्लैक-बियर्डड टॉम्ब बैट
इजीपशियन टॉम्ब बैट

* यह पूरी सूची नहीं है। हर प्रजाति को देखने की संभावना मौसम और जगह के अनुसार अलग-अलग होती है।



Follow Us



Acknowledgements

The Gharial Ecology Project (GEP) is jointly implemented through a partnership between the Madras Crocodile Bank Trust (MCBT) and the Gharial Local & Global Foundation (GLGF).

The project is supported internationally by Prague Zoo, CrocFest, Berlin Zoo, Los Angeles Zoo, and the IUCN SSC Crocodile Specialist Group, and nationally by the Astral Foundation.

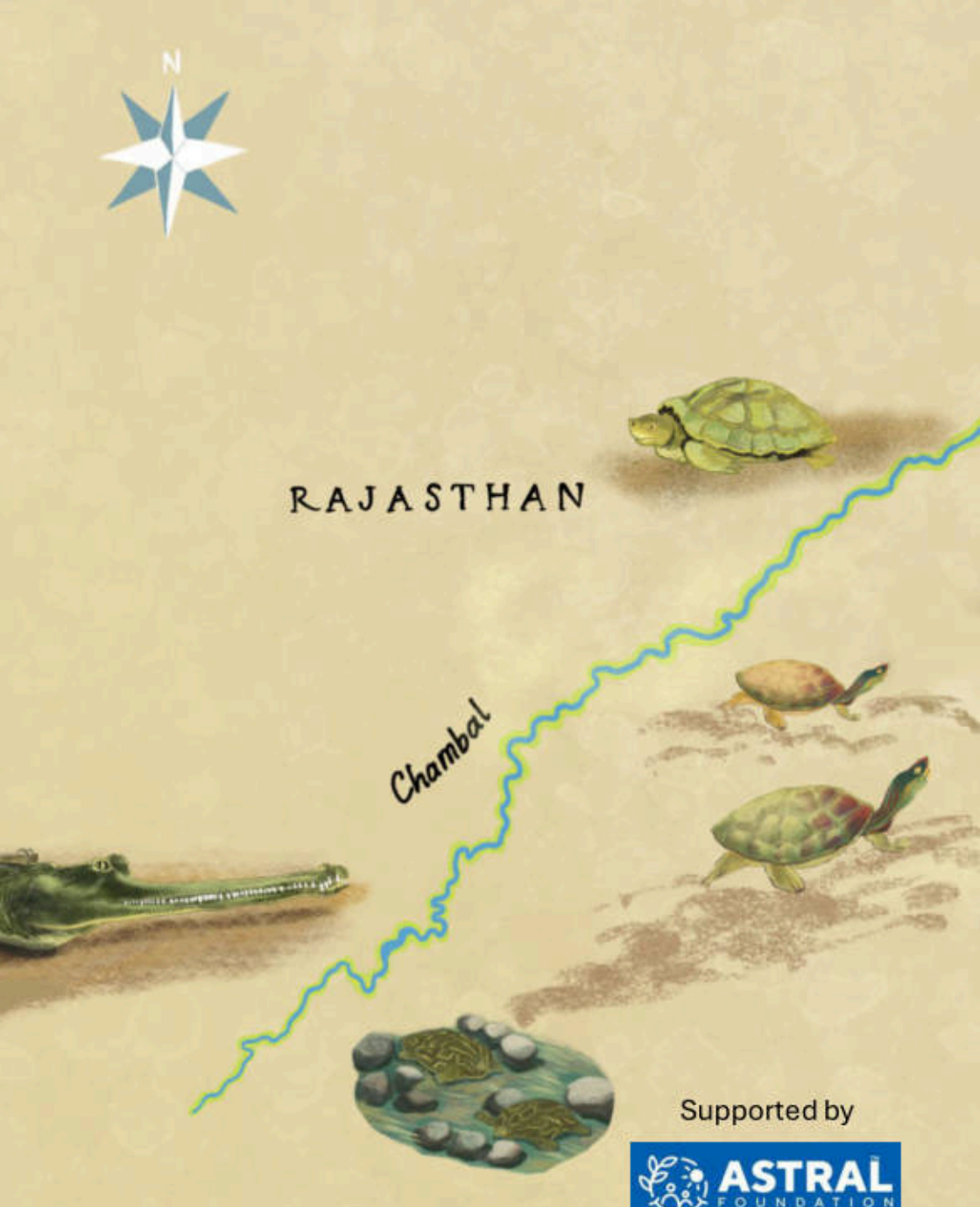
GEP works primarily in the National Chambal Sanctuary, in close collaboration with the Forest Departments of Rajasthan, Madhya Pradesh, and Uttar Pradesh, and with the support of the Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), Government of India.

We gratefully acknowledge all our partners and supporters for their continued commitment to the long-term conservation of the gharial and the Chambal River ecosystem.

चंबल के सारथी-नाविक प्रशिक्षण पुस्तिका

© Gharial Ecology Project (MCBT/GLGF) 2026
Material from this publication may be used for educational purposes, provided due credit is given.

Gharial Ecology Project (MCBT/GLGF),
52 Ranthambhore Road, Vigyan Nagar, Sawai Madhopur – 322001,
Rajasthan, India



Supported by

ASTRAL FOUNDATION

Government of Rajasthan
Forest Department